आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

कायोत्सर्ग बंधन मुक्ति का उपाय है–युवाचार्य महाश्रमण

–अंकित सेठिया (मीडिया सहसंयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 30 जनवरी : तेरापंथ भवन के प्रज्ञासमवसरण में आस्तिक दर्शन व नास्तिक दर्शन की चर्चा करते हुए युवाचार्यश्री महाश्रमण ने गीता व उत्तराध्ययन के मंतव्य को प्रकट किया। जन समुदाय को संबोधित करते हुये युवाचार्य प्रवर ने कहा गीता के तेरहवें अध्ययन में श्री कृष्ण कहते है ज्ञान रुपी नेत्र से शरीर और आत्मा के भेद को समझ लेने वाला व्यक्ति कर्म पुद्गलों से मुक्त होकर परम को प्राप्त कर लेता है। गीता की तरह उत्तराध्ययन भी आध्यात्मिक दर्शन है, आस्तिक दर्शन है। नौ तत्त्व में साधना की दृष्टि से दो तत्त्वों को मुख्यता दी गई है। बंध तत्त्व का परिवार है पुण्य–पाप और आश्रव और मोक्ष तत्त्व का परिवार है संवर और निर्जरा। आस्तिक दर्शन भेद विज्ञान की अवधारणा को मान्यता प्रदान करता है। कायोत्सर्ग के माध्यम से हम आत्मा तक पहुंच सकते है। कार्योत्सर्ग बंधन मुक्ति का उपाय है। प्रासंगिक रुप से कार्योत्सर्ग स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है। उच्च रक्तचाप से पीड़ित रोगियों के लिये विशेष लाभदायक है।

चार्वाक दर्शन नास्तिक दर्शन है। चार्वाक दर्शन का यह मत रहता है कि यह लोक उतना ही है जितना दृष्टिगोचर होता है परलोक को मान्यता नहीं देता और न ही पूर्वजन्म और पुनर्जन्म को स्वीकार करता है। आस्तिक दर्शन और नास्तिक दर्शन एक दूसरे के प्रतिपक्षी है। व्यक्ति जब मौत सामने देखता है तब उसकी विचारधारा मुड़ जाती है। वह चिंतन करता है कि अगर मैंने जीवन में अच्छे कर्म नही किये तो मुझे नरक मे तिर्यच गति में भ्रमण करना पड़ सकता है। जीवन में कठिनाईयां, संघर्ष आते हैं वे कई बार हमारे पथ को प्रशस्त करने में व आलोकित करने में सहायक बन जाती है। दुःख आने से भगवान भी याद आते है।

अणुव्रत–पत्रिका का तमिल–भाषा में अनुदित अंक युवाचार्य महाश्रमण को भेंट किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा तेरापंथ के विकास में अणुव्रत की अहम भूमिका रही है। आचार्य तुलसी की दक्षिण यात्रा के दौरान हजारों व्यक्ति अणुव्रती बने थे और पूरा वातावरण अणुव्रतमय बन गया था। सी. सुब्रहमुण्यम जैसे विशिष्ठ राजनेता भी नजदीकी से जुड़े हुये थे।

कार्यक्रम का सफल संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

एक्युप्रेशर से चल रहा है अनेक रोगों का इलाज

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के अन्तर्गत डॉ. हीरालाल छाजेड़(जैन) द्वारा एक्युप्रेशर व सुजोग चिकित्सा पद्धति द्वारा प्रतिदिन अनेक रोगों का इलाज किया जा रहा है। आवास व्यवस्था के कार्यालय के चिकित्सा केन्द्र में दोपहर 3 से 4 बजे तक रोजाना चलने वाले इस शिविर में सैकड़ों लोगों ने लाभ उठाया है। डॉ. छाजेड़ की पुस्तक ***''आरोग्य अपने हाथों मे''*** का विमोचन पीछले दिनों में स्वयं आचार्य महाप्रज्ञ ने विशाल जनमेदनी के सम्मुख किया था। इस कृति मे एक्युप्रेशर व सुजोग चिकित्सा पद्धति के साथ आचार्य महाप्रज्ञ की कृति ***''भीतर का रोग भीतर का इलाज''*** में प्रयोग किये गये मंत्रों का भी समावेश किया गया है। डॉ. हीरालाल छाजेड़ अपने इस अनुभव व ज्ञान को मानव सेवा में लगाने को कृत संकल्पित है।

क्रमश : 2

सेसुमु विद्यालय में करवाये जीवन विज्ञान के प्रयोग

सेसुमु विद्यालय के विद्यार्थीयों को आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा शिक्षा जगत को प्रदत्त अभिनव अवधान जीवन विज्ञान के प्रयोगों का प्रशिक्षण देते हुए प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल ने मानसिक शांति के गूर सिखाये। मुनि किशनलाल ने जीवन विज्ञान की सभी 12 ईकाईयों को विस्तार से समझाते हुए आसन, ध्यान, अनुप्रेक्षा, श्वास प्रेक्षा आदि का प्रशिक्षण दिया। इसके पूर्व मुनि नीरज कुमार ने अणुव्रत गीत से कार्यक्रम का आगाज किया। समण सिद्धप्रज्ञ ने जीवन विज्ञान मे समाहित संकल्प के प्रयोग करवाये। विद्यालय के प्राचार्य ने मुनिवृंद के द्वारा विद्यार्थीयों के जीवन निर्माण का प्रशिक्षण दिये जाने पर आभार ज्ञापन किया। संचालन अध्यापिका श्रीमति कल्पना ने किया।

अंकित सेठिया
मीडिया सहसंयोजक